हिंदी उपन्यास : आदिवासी संघर्ष और पारिस्थितिकीय संकट

(1990-2016)

Hindi Upanyas : Aadiwasi Sanghrsh Aur Paristhitikiya Sankat (1990-2016)

Thesis submitted for the partial fulfilment of the requirements

for the degree Doctor of Philosophy in Arts

By

निधि पांडेय

Nidhi Pandey

Department of Hindi

Faculty of Humanities and Social Sciences

Presidency University

Kolkata, India

2024

हिंदी उपन्यास : आदिवासी संघर्ष और पारिस्थितिकीय संकट

(1990-2016)

Hindi Upanyas : Aadiwasi Sanghrsh Aur Paristhitikiya Sankat (1990-2016)

Thesis submitted for the partial fulfilment of the requirements

for the degree Doctor of Philosophy in Arts

By

निधि पांडेय

Nidhi Pandey

Under the Supervision of

डॉ. मुन्नी गुप्ता

Dr. Munni Gupta

Department of Hindi

Faculty of Humanities and Social Sciences

Presidency University

Kolkata, India

2024

हिंदी उपन्यास : आदिवासी संघर्ष और पारिस्थितिकीय संकट (1990-2016)

Hindi Upanyas : Aadiwasi Sanghrsh Aur Paristhitikiya Sankat (1990-2016)

Name of the Candidate : Nidhi Pandey

Registration Number : R- 18RS01210173

Date of Registration : 31st October, 2019

Department - Hindi

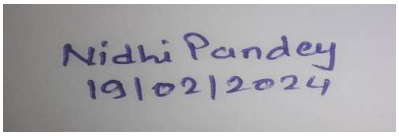

निधि पांडेय

Nidhi Pandey

शोधार्थी

घोषणा

मैं, निधि पांडेय, यह घोषणा करती हूँ कि पी-एच.डी की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध **"हिंदी उपन्यास : आदिवासी संघर्ष और पारिस्थितिकीय संकट (1990-2016)"** मौलिक है तथा परिश्रमपूर्वक अध्ययन, मनन और शोध के उपरांत तैयार किया गया है। इस शोध-कार्य का निर्देशन डॉ. मुन्नी गुप्ता, सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता (पश्चिम बंगाल) ने किया है।

इस शोध-प्रबंध में दी गई सभी जानकारियां अकादमिक नियमों और नैतिक आचरण के अनुरूप प्राप्त और प्रस्तुत की गई हैं।

मैं यह भी घोषणा करती हूँ कि लागू नियमों और आचरणों के अनुसार मैंने उन सभी सामग्रियों और परिणामों को सम्यक रूप से उध्दृत और संदर्भित किया है जो इस शोध-प्रबंध में मौलिक नहीं हैं।

मैं यह भी घोषणा करती हूँ कि यह शोध-प्रबंध अंशतः या पूर्ण रूप से किसी अन्य विश्वविद्यालय या संस्थान में इससे पहले प्रस्तुत नहीं किया गया है।

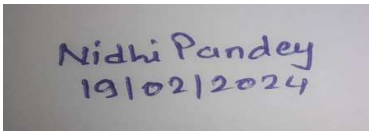

निधि पांडेय

Nidhi Pandey

Hindi Department

Presidency University, Kolkata

Registration Number : R**-18RS01210173**

PRESIDENCY UNIVERSITY
KOLKATA

Presidency University

Hindoo College (1817-1855), Presidency College (1855-2010)

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि निधि पांडेय ने पीएच-डी. उपाधि के लिये **"हिंदी उपन्यास : आदिवासी संघर्ष और पारिस्थितिकीय संकट (1990-2016)"** शीर्षक शोध प्रबंध मेरे निर्देशन में प्रस्तुत किया है।

यह शोध कार्य निधि पांडेय की मौलिक कृति है, न तो इसका कोई अंग उनके द्वारा किसी उपाधि के लिये प्रस्तुत हुआ है और न ही मेरी जानकारी में अब तक किसी अन्य व्यक्ति ने इस पर शोध कार्य किया है।

मैं इन्हें शोध कार्य, आचरण और चरित्र की दृष्टि से इस उपाधि के योग्य एवं उपयुक्त समझती हूँ।

Dr. Munni Gupta
Assistant Professor
Department of Hindi
Presidency University, Kol-73

डॉ. मुन्नी गुप्ता

शोध निर्देशक

हिंदी विभाग,

प्रेसीडेंसी यूनिवर्सिटी, कोलकाता

86/1, College Street, Kolkata - 700 073, Phone : (033) 2241 1960, Fax : (033) 2241 2738

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Selected Language	Hindi

Submission Information

Author Name	निधि पांडेय
Title	हिंदी उपन्यास: आदिवासी संघर्ष और पारिस्थितिकीय संकट (1990-2016)
Paper/Submission ID	1436132
Submitted by	rabi.lib@presiuniv.ac.in
Submission Date	2024-02-15 14:45:05
Document type	Thesis

Result Information

Similarity **6%**

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File

Nidhi Pandey
19/02/2024

Dr. Munni Gupta
Assistant Professor
Department of Hindi
Presidency University, Kol-73

19/02/2024

Head
Dr. Anindya Gangopadhyay
Department of Hindi
Presidency University, Kol-73

भूमिका

आज के समय में प्रकृति केवल 'कॉमोडिटी' बनकर रह गयी है। प्राकृतिक संसाधनों - जल, जंगल और जमीन के प्रति उपभोगवादी नजरिया अपनाते हुये, इन्हें केवल विकास के माध्यम के रूप में देखा जा रहा है। वहीं आदिवासी दर्शन प्रकृति का दर्शन है जो प्रकृति और मानव के बीच सहजीविता एवं साहचर्य के संबंध को महत्व देता है। अगर आदिवासी समुदाय अपनी सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक आवश्यकताओं के लिए प्रकृति पर निर्भर है तो वह प्रकृति का संरक्षक भी रहा है। यहाँ प्रकृति पूज्य है, वह साध्य है, साधन नहीं। जबकि तथाकथित विकसित सभ्यताओं में उत्तरोत्तर होते गये तकनीकी आविष्कारों के कारण प्रकृति पर विजय हासिल करने की प्रवृत्ति पैदा हुई है।

विकास की आड़ में मनुष्य ने प्राकृतिक संसाधनों की जो दशा की है, उसका परिणाम हम आज वैश्विक स्तर पर पारिस्थितिकीय संकट अथवा इकोलॉजिकल क्राइसिस के रूप में देख रहे हैं। इस पारिस्थितिकीय संकट की परिधि में पृथ्वी का समस्त जैविक-अजैविक संसार है, क्योंकि ये सब प्रकृति के ही विभिन्न घटकों में शामिल हैं। 'मनुष्य' प्रजाति कोई विशेष नहीं है, प्रकृति के सारे नियम-कायदे उस पर भी समान रूप से लागू होते हैं। लेकिन इस पारिस्थितिकीय विनाश का शिकार सबसे ज्यादा कोई मानव समुदाय हुआ है, तो वह है - आदिवासी मानव समुदाय। अब तक प्रकृति को अपना मानकर बिना किसी लालच के जीने वाले आदिवासियों को कभी 'विकास' के नाम पर तो कभी फॉरेस्ट कंजर्वेशन या वाइल्ड लाइफ प्रोटेक्शन के नाम पर बार-बार विस्थापित किया जा रहा है, जिसके भयंकर परिणाम आदिवासी समुदायों को भुगतने पड़ रहे हैं।

इस समुदाय के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक संघर्षों का इतिहास बहुत लंबा रहा है, जिसमें पारिस्थितिकीय विनाश से उत्पन्न संघर्ष एक नया अध्याय जोड़ता है।

इस शोध-प्रबंध के केंद्र में यही पारिस्थितिकीय विनाश और इससे उत्पन्न आदिवासी संघर्ष है।

इस शोध-प्रबंध को मुख्यतः पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है।

पहला अध्याय **"भारतीय आदिवासी समाज : एक परिचय",** तथ्यपरक विश्लेषण पर आधारित है। इस अध्याय के अंतर्गत कुल चार उप-अध्याय हैं। इनमें आदिवासी समाज की अवधारणा और स्वरूप को स्पष्ट करते हुये आदिवासी इतिहास के अंतर्गत, विभिन्न सभ्यताओं के बनने-बिगड़ने के चरण में और नई संस्कृतियों के विकास क्रम में जो पड़ाव आये हैं उनमें आदिवासियों की स्थिति में क्या बदलाव आए तथा अब तक आदिवासी समाज ने अपने अस्तित्व को बचाये रखने के लिए नई बन रही सामाजिक संरचना और राजनीतिक व्यवस्था से किस तरह संघर्ष किया है, इसका विस्तृत विवेचन-विश्लेषण किया गया है। साथ ही इनकी मूल जड़ें और मूल सांस्कृतिक पृष्ठभूमि क्या रही है तथा भूमंडलीकरण ने इन्हें किस सीमा तक प्रभावित किया है जैसे तमाम बिंदुओं पर भी प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय **"आदिवासी समाज और हिंदी उपन्यासों की विकास यात्रा"** में दो उप-अध्यायों - बीसवीं शताब्दी के हिंदी उपन्यासों में आदिवासी समाज और इक्कीसवीं शताब्दी के हिंदी उपन्यासों में आदिवासी समाज - के अंतर्गत हिंदी आदिवासी उपन्यासों के विकास को समझाया गया है।

इन उप-अध्यायों में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि कैसे पूर्व के उपन्यासों में छिट-पुट आदिवासी पात्रों के चित्रण से होते हुए बीसवीं सदी के अंत तक आते-आते आदिवासी समुदाय अपनी पूरी संस्कृति-सभ्यता एवं संघर्ष के साथ चित्रित होने लगता है।

इसके अतिरिक्त तीसरे उप-अध्याय 'आदिवासी समाज एवं हिंदी उपन्यासों के बीच अन्तर्संबंध' में आदिवासी समाज की मान्यता, संस्कृति एवं आचार-विचार के आलोक में हिंदी आदिवासी उपन्यासों का आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय **'हिंदी उपन्यासों में आदिवासी संघर्ष : राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक संदर्भ'** में 1990-2016 के बीच लिखे गये हिंदी आदिवासी उपन्यासों के आधार पर आदिवासी संघर्ष

के राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक पहलुओं का विवेचन-विश्लेषण किया गया है। 'राजनीतिक संदर्भ' के अंतर्गत, भारतीय संविधान में आदिवासी समुदाय की स्थिति को स्पष्ट करते हुये, आदिवासियों के राजनीतिक सवालों की छानबीन तथा आदिवासी राजनीतिक नेतृत्व की दशा और दिशा पर प्रकाश डाला गया है।

चतुर्थ अध्याय **"आदिवासी समाज, पारिस्थितिकीय संकट और हिंदी उपन्यास" में 'पारिस्थितिकी'** की अवधारणा एवं इतिहास पर विचार करते हुये, पारिस्थितिकीय संकट से उत्पन्न संघर्ष एवं चुनौतियों पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही आलोच्य उपन्यासों में चित्रित प्रकृति और आदिवासी समुदायों के बीच अन्तर्संबंधों को स्पष्ट करते हुए पारिस्थितिकीय विनाश से उत्पन्न संघर्षों का आदिवासियों के विशेष संदर्भ में अध्ययन-विश्लेषण किया गया है।

पंचम अध्याय है - **"आदिवासी समाज, हिंदी उपन्यास और शिल्प-विधान"।** इसके अंतर्गत आदिवासी बोली और भाषा का परिचयात्मक विवरण देते हुये 'आदिवासी भाषायी अस्मिता' के सवालों पर विचार किया गया है। इस अध्याय में आदिवासी उपन्यासों की भाषा में आदिवासी तत्वों की पहचान करते हुये, उपन्यासकारों की विशिष्ट शैली को रेखांकित किया गया है।

शोध-प्रबंध के अंत में समस्त अध्यायों का निष्कर्ष **उपसंहार के** रूप में दिया गया है।

मैं शोध-निर्देशिका डॉ. मुन्नी गुप्ता के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके मार्गदर्शन और लगातार दिये गये प्रोत्साहन के कारण मैं यह शोध-प्रबंध पूरा कर पाई हूँ। प्रेसिडेंसी विश्वविद्यालय हिंदी विभाग के सभी प्राध्यापकों - प्रो. तनुजा मजुमदार, डॉ. अनिंद्य गंगोपाध्याय, डॉ. वेदरमण पांडेय और डॉ. ऋषिभूषण चौबे के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ जिनके सहयोग से शोध के लिए उपयुक्त वातावरण मिला।

आईपीएस शुभम अग्रवाल और शोधार्थी मित्रों - डॉ. प्रियंका सिंह, डॉ. पूजा मिश्रा, डॉ. नेहा चतुर्वेदी, डॉ. कार्तिक रॉय, को भी धन्यवाद देती हूँ। मैं पूजा दीदी और प्रियंका दीदी के प्रति विशेष आभारी हूँ जिन्होंने यथासंभव मेरा सहयोग किया।

मैं, अपनी माँ और अपनी बहनों - सलोनी और ***ऋचा*** के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ, जिनका साथ और प्यार मुझे कदम-कदम पर मिला है।

पापा, मनोज चाचा और भाई मनीष को भी समय-समय पर उनके सहयोग के लिए धन्यवाद देती हूँ।

अंत में, मैं यह शोध- प्रबंध अपने आदरणीय नाना जी ***स्वर्गीय श्री केदार नाथ पांडेय*** को समर्पित करती हूँ।

- **प्रकाशित शोध आलेख**

क्रम	**लेख का शीर्षक**	**पत्रिका**	**अंक/पृष्ठ/लिंक**
01	आदिवासी राजनीतिक संघर्ष : समर शेष है?	समकालीन हस्तक्षेप	वर्ष: 17, अंक: 1, जुलाई-सितंबर , 2023

- **शोध-संबंधी संगोष्ठी**

क्रम	**लेख का शीर्षक**	**संस्थान**	**तिथि/वर्ष**
01	संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन में पांचवी अनुसूची बनाम छठवी अनुसूची का तुलनात्मक परिदृश्य	भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली एवं पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.)	8-10 जून 2023
02	भारतीय राजव्यवस्था में आदिवासी अस्मिता का सवाल	Devanagari Post Graduate College, Gulaothi, Bulandshahr, U.P.	23 जुलाई 2023